कला और पर्यावरण

मालविका राजनारायण

मलयालम फ़िल्म *ओट्टल* (2014, जयराज द्वारा निर्देशित) में दो युवा लड़कों के जीवन को चित्रित किया गया है। उनमें से एक है कुट्टपई, जिसे उसके ग़रीब और बुज़ुर्ग दादा ने पाला है जो बैकवाटर में बतख़ पालते हैं; दूसरा है टिंकू जो एक सम्पन्न परिवार से है और एक स्थानीय प्राइवेट स्कूल में पढ़ता है। कुट्टपई स्कूल नहीं जाता, लेकिन उसके पास बतख़ों, पौधों, पेड़ों, पक्षियों और तितलियों के बारे में ज्ञान का ख़ज़ाना है। इन सबके बारे में उसे छोटी-से-छोटी जानकारी मालूम है जो उसे अपने रोज़मर्रा के अनुभवों से, इन प्राणियों के साथ बिताए जीवन से और अपने दादा से पूछे गए असंख्य प्रश्नों के धैर्यपूर्ण उत्तरों से मिली है। दूसरी ओर टिंकू है जो बोरियत से और स्कूल के पाठों में स्थित दुनिया व अपने जीवन के बीच के अलगाव से संघर्ष कर रहा है। उसके लिए कुट्टपई के साथ दोस्ती एक पूरी नई दुनिया खोलती है। नई-नई जानकारियों से भरी यह दुनिया उसे पूरे-पूरे दिन, स्कूल की उबाऊ दिनचर्या से दूर बिताने के लिए उकसाती है। हालाँकि फ़िल्म आगे बढ़ते-बढ़ते थोड़ा गम्भीर मोड़ ले लेती है जब कुट्टपई को आतिशबाज़ी बनाने वाली फैक्ट्री में काम करने के लिए भेज दिया जाता है। फिर भी, पूरी फ़िल्म का निचोड़ हमें प्रकृति की सुन्दरता और उसके चमत्कारों के रूप में दिखता है। फ़िल्म का प्रत्येक दृश्य हमें केरल के बैकवाटर की ध्वनियों और दृश्यों से अनुभूत कराता है और हमें ख़ुद में कुट्टपई को खोजने के लिए प्रेरित करता है।

पर्यावरण को कक्षा में लाना

अज़ीम प्रेमजी स्कूल, उत्तरकाशी की प्रारम्भिक बाल्यावस्था शिक्षा (ईसीई) की एक कक्षा में चार साल के बच्चों द्वारा बनाए गए जानवरों के चित्रों को प्रदर्शित (**चित्र-1** और **2**) किया गया। शिक्षक ने सभी चित्रों पर लेबल लगाए। यह गतिविधि कई मायनों में कला को कक्षा में एकीकृत करने का

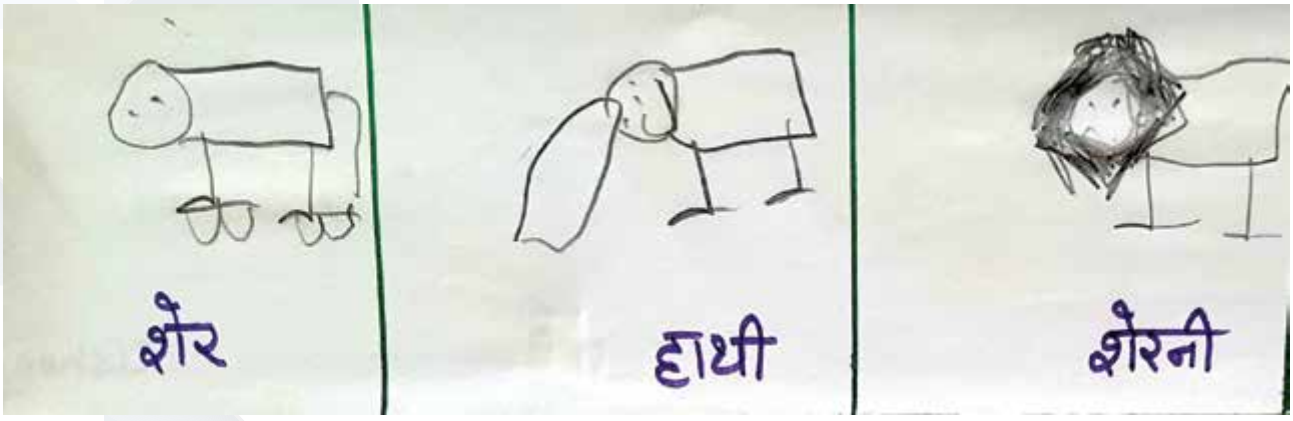

चित्र-1 और 2 : चार साल के बच्चों द्वारा बनाए गए जानवरों के चित्र।

एक उल्लेखनीय उदाहरण है। प्रारम्भिक वर्षों में, बच्चों द्वारा बनाए गए सभी चित्रों को लिखित अभिव्यक्ति और बातचीत का रूप ही माना जाता है। इस मामले में, बच्चों द्वारा बनाए जानवरों के चित्रों की प्रदर्शनी को हम कलात्मक प्रयास के तौर पर देख सकते हैं क्योंकि चित्रों में दिख रही विभिन्न कल्पनाओं के कारण देखने वालों के मन में यह सवाल पैदा होता है कि अलग-अलग दिमाग़, अलग-अलग जानवरों को किस तरह देख सकते हैं। मान लीजिए कि बच्चों के बनाए चित्रों की बजाय हमने आमतौर पर उपलब्ध, चटकीले रंगों वाला पशुओं का चार्ट स्थायी रूप से प्रदर्शित किया होता। ऐसा चार्ट धीरे-धीरे बच्चों की कल्पनाओं को चार्ट में या ज़्यादा-से-ज़्यादा कुछ पाठ्यपुस्तकों और कहानी की क़िताबों में बनी छवियों तक सीमित कर देता। वे धीरे-धीरे अपने द्वारा बनाए घोड़ों, गायों, कुत्तों, सूअरों, बाघों और चूहों के चित्रों को लोकप्रिय कल्पना के अनुसार ही ढालने लगते हैं। अगर जानवरों के कोई भी चित्र आमतौर पर दिखने वाले चित्रों के मापदण्डों से अलग दिखाई देते हैं तो बच्चों को यह बात असहज या भ्रमित कर देती है या इससे भी बदतर, उन्हें ये चित्र 'ग़लत' लगते हैं।

बहुत कम उम्र से, बच्चों को प्राकृतिक जगत के विभिन्न कलात्मक चित्रणों से परिचित कराना आवश्यक है। इसके साथ-साथ जहाँ सम्भव हो उन्हें प्राकृतिक जगत के वास्तविक अनुभव भी दिलाना चाहिए। इसके अलावा उन्हें जानवरों के आवासों और व्यवहारों को प्रामाणिक ढंग से दिखाने वाली वीडियो डॉक्यूमेंट्री भी दिखानी चाहिए। जानवरों के लोक चित्र, विभिन्न कलाकारों द्वारा बनाए गए स्याही स्केच, फ़ोटोग्राफ़रों द्वारा खींची गई जानवरों की अनोखी तस्वीरें — ये सभी बच्चों की कल्पना और भावनात्मक प्रतिक्रियाओं को प्रेरित करने के अमूल्य स्रोत हैं। जब कलात्मक अभिव्यक्ति की ऐसी विविधता कक्षा में साझा होती है और चर्चा में लाई जाती है, तो बच्चे अपने परिवेश की विविधता और उसकी बारीक़ियों को देखने के प्रति संवेदनशील बनते हैं।

अवसर पैदा करना

स्कूलों को यह तय करने में कई चुनौतियों का सामना करना पड़ता है कि पर्यावरण जागरूकता पैदा करने के लिए कैसे कला को सीखने के अनुभवों में शामिल किया जाए। इस कोशिश में एक समस्या आती है कला को सांस्कृतिक 'मनोरंजन' देने तक सीमित कर देने की और दूसरी समस्या है प्रकृति के साथ हमारे सिकुड़ते रिश्ते की। हज़ारों वर्षों से, कला का जन्म प्रकृति के साथ एक गहरे जुड़ाव से होता रहा है। इसलिए, यह आश्चर्य की बात नहीं है कि कला से दूर होने का एक प्रभाव पर्यावरण से दूर होना हो सकता है और पर्यावरण से दूर होने का प्रभाव कला से दूर होना हो सकता है। एक चुनौती यह भी है कि हम स्कूल के परिवेश और दिनचर्या को कैसे रचते हैं — क्या विभिन्न प्रकार के पेड़-पौधे बच्चों की पहुँच में होते हैं? क्या उन्हें वनस्पतियों और जीव-जन्तुओं को पोषित करने के लिए दैनिक रूप से प्रोत्साहित किया जाता है। क्या उन्हें प्रकृति के चमत्कारों का पता लगाने और खोजने के लिए कक्षा के बाहर पर्याप्त समय बिताने के और अपनी खोजों को दूसरों के साथ साझा करने के मौक़े मिलते हैं? क्या बच्चों की रचनात्मक कल्पनाओं, उनके विचारों व अभिव्यक्तियों को समझा और प्रोत्साहित किया जाता है?

शिक्षक क्या कर सकते हैं

हालाँकि कई शिक्षक व्यावहारिक ढंग से सीखने, करके सीखने और अनुभवात्मक अधिगम जैसी शिक्षण पद्धतियों को अपनाने का प्रयास करते हैं, लेकिन हमें बारीक़ी से यह जाँचना चाहिए कि क्या चुनी गई गतिविधियों से वास्तव में बच्चे वह सीख पा रहे हैं/ अनुभव ले पा रहे हैं जिसकी अभिलाषा की गई है। आइए हम कुछ उदाहरण देखते हैं कि किस प्रकार कला-समेकित दृष्टिकोण के साथ कुछ पर्यावरण सम्बन्धी विषयों की समझ बनाने की योजना बनाई जा सकती है। ये कुछ सम्भावनाएँ हैं जिनके द्वारा हम अनुभवात्मक अधिगम के लिए कला को एक उपकरण के रूप में उपयोग कर सकते हैं।

1. आइए हम कक्षा-4 की कल्पना करते हैं जहाँ एक जीवन स्रोत और बुनियादी ज़रूरत के रूप में पानी की चर्चा हो रही है। शिक्षिका चर्चा को आगे बढ़ाती हैं और बच्चों को प्रदूषण के कारण होनी वाली समस्याओं के बारे में बात करने के लिए प्रेरित करती हैं। वे इस समस्या को हल करने के उपायों के बारे में भी चर्चा करती हैं। एक कला गतिविधि के रूप में, बच्चों को अपनी कल्पनाएँ इस्तेमाल करते हुए प्रदूषण के विषय और उसके प्रति जागरूकता जगाने से जुड़े पोस्टर, कविताएँ और कहानियाँ बनाकर उन्हें कक्षा या स्कूल परिसर में प्रदर्शित करने के लिए कहा जाता है। यहाँ, बच्चे सीखने और कलाकृतियाँ बनाने के लिए अपने अवलोकनों और अनुभवों को आधार बनाते हैं। कलाकृतियाँ बनाने की प्रक्रियाएँ अवधारणाओं को मूर्त रूप में समझने के लिए बच्चों को एक सुखद और यादगार मौक़ा प्रदान करती हैं। लेकिन इसके साथ ही, शिक्षकों को यह भी सुनिश्चित करना होगा कि बच्चों ने जो कुछ सीखा है वह कक्षा के बाहर उनके दैनिक जीवन में व्यवहारगत बदलावों और सचेत कार्यों के रूप में झलके।
2. कक्षा-5 में, बच्चों को ऐसे समूह प्रॉजेक्ट दिए जा सकते हैं जहाँ उन्हें अपने स्थानीय परिवेश के विभिन्न पहलुओं का अध्ययन करने हेतु अपने स्कूल, पड़ोस या गाँव का सर्वे करना हो। आगे कुछ उदाहरण दिए गए हैं :

- आवारा पशुओं की संख्या और उनकी देखभाल और हाल-चाल के बारे में पता लगाना
- इलाक़े में पानी के प्राकृतिक स्रोत, उनके भण्डारण, वितरण और उपयोग का पता लगाना
- अपशिष्ट संग्रह, प्रबन्धन और निपटान के तरीक़ों के बारे में जानना

सर्वे के बाद, समूहों से, एकत्र किए गए डेटा से मिली सीखों को रचनात्मक तरीक़ों से प्रस्तुत करने के लिए कहा जा सकता है। कुछ बच्चे तस्वीरों और मुख्य डेटा को लेते हुए सजावटी चार्ट बना सकते हैं; कुछ एक कहानी बना सकते हैं और नाटक के रूप में उसका प्रदर्शन कर सकते हैं, कुछ बच्चे एक काल्पनिक आदर्श इलाक़े का 3डी मॉडल बना सकते हैं और कुछ चित्र बना सकते हैं। अनुभवात्मक अधिगम का यह भाग ज़्यादा प्रभावी हो सकता है क्योंकि इसमें बच्चे एक सर्वे के माध्यम से अपने आस-पास के परिवेश की गहरी पड़ताल करते हैं और उन्हें यह मौक़ा दिया जाता है कि वे एक रचनात्मक/ कला की प्रक्रिया के माध्यम से अपने परिवेश की पुनर्कल्पना कर सकें और उसकी समस्याओं के समाधान और मॉडल प्रस्तुत कर सकें

3. बच्चों को पर्यावरण के प्रति और संवेदनशील बनाने के लिए और उनके मन में प्रकृति के प्रति सराहना का भाव पैदा करने के लिए संगीत और ध्वनियों के साथ स्वरों के सरल प्रयोग किए जा सकते हैं। बच्चों को जानवरों की आवाज़ें, पक्षियों की तरह-तरह की आवाज़ें; बारिश, पानी, गरजने और हवा की आवाज़ें सुनाई जा सकती हैं। फिर वे रोल-प्ले की गतिविधियों में ये आवाज़ें निकालने की और साथ ही इन पशु-पक्षियों के चाल-ढाल की नक़ल करने की कोशिश कर सकते हैं। यह अन्य जीवों के प्रति सहानुभूति और करुणा के भाव विकसित करने और पर्यावरण में सह-अस्तित्व के नाज़ुक सन्तुलन को देखने-समझने का एक प्रभावी तरीक़ा बन सकता है।
4. बच्चों के सीखने के लिए प्रिंट-समृद्ध वातावरण बनाना जितना ज़रूरी है, उतना ही महत्त्वपूर्ण है ऐसा सौन्दर्यपूर्ण और मनभावन वातावरण बनाना जो उनकी सभी इन्द्रियों को सक्रिय कर सके। इसके लिए हम बेकार पड़ी लकड़ी, धातु या प्रकृति में पाई जाने वाली किसी अन्य वस्तु के हल्के टुकड़ों का इस्तेमाल करके विंड चाइम बनाकर कक्षा में लगा सकते हैं। बच्चों के साथ ऐसे सरल प्रयोग किए जा सकते हैं जहाँ वे विभिन्न वस्तुओं से निकलने वाली ध्वनियों को जानें-समझें और ख़ुद अपने ज़ाइलोफोन-नुमा उपकरण तैयार करें। बच्चे अलग-अलग तरह की सतहों को छूना, उन्हें थपकी मारकर बजाना और उनमें लय-ताल ढूँढ़ना पसन्द करते हैं। स्कूल परिसरों में ऐसी विशेष सतहें बनाई जा सकती हैं जहाँ बच्चे प्रकृति से जुड़ी ध्वनियों का पता लगा सकें। सूखी टहनियों, शंकुओं, बीज की फलियों और विभिन्न बनावटों व पैटर्नों वाली प्राकृतिक वस्तुओं से मूर्तियाँ बनाई जा सकती हैं। अगर ये चीज़ें हल्की हों, तो इन्हें काइनेटिक आर्ट के रूप में हवा में झूलने के लिए लटकाया जा सकता है।

एक समग्र अनुभव के रूप में कला

हालाँकि ऊपर दिए गए ये उदाहरण अनुभवात्मक अधिगम को बेहतर बनाते हैं, लेकिन हर बच्चे के लिए इनसे जुड़े अनुभव की गहनता, उसका असर और उसकी प्रभावोत्पादकता अलग-अलग हो सकती है। फिर भी, ऐसे प्रयास सीखने की अलग-अलग क्षमताओं (या बहु-प्रतिभाओं) वाले बच्चों के लिए अवसरों को बढ़ाते हैं और कक्षा से बाहर सीखने के मौक़ों को भी। कला और शिक्षा में कला के उपयोग के प्रमुख उद्देश्य हमारी सभी इन्द्रियों को जगाना, हमारे चारों ओर मौजूद जीवन के सभी रूपों के लिए करुणा का भाव पैदा करना और साहसपूर्वक व कल्पनात्मक ढंग से सोचने की रचनात्मक क्षमता विकसित करना हैं।

कला बच्चों के लिए तल्लीनता भरे ऐसे सुखद अनुभव रचने का एक साधन भी है, जो उनके सीखने पर एक लम्बे समय तक चलने वाला प्रभाव डाल सकता है। आज की दुनिया के अधिकांश मौलिक वैज्ञानिक आविष्कारों के बीज कल्पित विज्ञान कथाओं, सिनेमा और कला में ही मौजूद रहे हैं। इस तथ्य से हमें, कला के बारे में अपने विचारों को, तकनीकी कौशलों में दक्षता हासिल करने और सुन्दरता से भरे दृश्य रचने से आगे ले जाकर कल्पना की उड़ान भरने के लिए प्रोत्साहित होना चाहिए।

मालविका राजनारायण वडोदरा, गुजरात में रहने वाली एक विज़ुअल आर्टिस्ट हैं। वे 2017 में अज़ीम प्रेमजी फ़ाउण्डेशन के फ़ेलोशिप कार्यक्रम से जुड़ीं और वर्तमान में सभी अज़ीम प्रेमजी स्कूलों में कला और संगीत की रिसोर्स पर्सन के रूप में काम करती हैं। साथ ही वे वडोदरा में अपनी कला का अभ्यास भी जारी रखे हुए हैं। उन्हें कला और शिक्षा के बारे में लिखना पसन्द है। उनसे malavika.rajnarayan@azimpremjifoundation.org पर सम्पर्क किया जा सकता है।

अनुवाद : सन्दीप दुबे **पुनरीक्षण :** भरत त्रिपाठी **कॉपी एडिटर :** अनुज उपाध्याय